विकसित भारत विज़न@2047 ग्रामीण खेलों को नई दिशा

राकेश थपलियाल

आज जब भारत 'विकसित भारत@2047' के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब खेलों को केवल मनोरंजन या प्रतिस्पर्धा तक सीमित नहीं रखा गया है बल्कि उन्हें राष्ट्र निर्माण, युवा सशक्तीकरण और वैश्विक पहचान का एक सशक्त माध्यम बनाया जा रहा है। खेलो इंडिया, KIRTI, पंचायत युवा क्रीड़ा एवं खेल अभियान, सांसद खेल महोत्सव और राष्ट्रीय खेल शासन अधिनियम जैसी पहलों के माध्यम से सरकार ग्रामीण खेलों को नई दिशा, नई ऊर्जा और नया भविष्य दे रही है। यह लेख उसी परिवर्तनकारी यात्रा की अभिव्यक्ति है, जिसमें 'ग्रामीण खेल' भारत की खेल महाशक्ति बनने की आकांक्षा के केंद्र में हैं।

ग्रामीण खेल भारत के उस स्वप्न की धड़कन हैं, जिसके तहत देश अगले दो दशकों में विश्व के शीर्ष पाँच राष्ट्रों में अपनी मजबूत पहचान बनाना चाहता है। खेल प्रेमी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार इस लक्ष्य को साकार करने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। विज़न 2047 के अंतर्गत ग्रामीण खेलों को विशेष प्राथमिकता दी गई है। इसी दिशा में राष्ट्रीय खेल शासन अधिनियम, खेलो भारत नीति 2025, खेलो इंडिया योजनाएँ, पंचायत युवा क्रीड़ा एवं खेल अभियान, सांसद खेल महोत्सव और *ASMITA* लीग जैसी अनेक पहलों को प्रभावी रूप से लागू किया जा रहा है।

भारत की खेल शक्ति की ग्रामीण जड़ें

हॉकी, कुश्ती, मुक्केबाज़ी, एथलेटिक्स और तीरंदाज़ी जैसे कई खेलों में भारत आज एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभर चुका है, जिनकी जड़ें ग्रामीण भारत में गहराई तक जुड़ी हुई हैं। आज भी देश की अधिकांश खेल प्रतिभाएँ दूरदराज़ के गाँवों और सीमांत क्षेत्रों से निकलकर सामने आती हैं जहाँ जज़्बा, संघर्ष और अपार संभावनाएँ भविष्य के चैंपियनों को गढ़ती हैं। इसीलिए कहा जाता है– भारतीय खेलों की आत्मा ग्रामीण भारत में बसती है।

लेखक वरिष्ठ खेल पत्रकार हैं। ईमेलः sports.rakesh@gmail.com

हर गाँव से चैंपियन की खोज

कई दशक पहले भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) ने देश के ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों की खेल प्रतिभाओं को निखारने के उद्देश्य से 'विशेष क्षेत्र खेल योजना' (स्पेशल एरिया गेम्स–SAG) की शुरुआत की थी। इस योजना के अंतर्गत SAI के प्रशिक्षकों ने दूरदराज़ के गाँवों और दुर्गम इलाकों में व्यापक प्रतिभा खोज अभियान चलाए। राजस्थान, उत्तर-पूर्वी राज्यों, जम्मू-कश्मीर, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों से तीरंदाज़ी, फेंसिंग, साइक्लिंग और एथलेटिक्स से जुड़े होनहार खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें SAI के प्रशिक्षण केंद्रों में प्रवेश दिया गया। इन खिलाड़ियों को वैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षण और नियमित प्रतियोगिताओं का अवसर प्रदान किया गया। आगे चलकर इनमें से अनेक खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया और देश का नाम रोशन किया। इससे यह सिद्ध हुआ कि ग्रामीण भारत में अपार खेल प्रतिभा मौजूद है।

निवेश और मानसिकता परिवर्तन से अवसरों का विस्तार

आज सरकार वार्ड, पंचायत, ब्लॉक, ज़िला और राज्य-स्तर पर वर्षभर खेल प्रशिक्षण और प्रतियोगिता सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी उद्देश्य से खेल बजट में कई गुना वृद्धि की गई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में कहा कि पिछले एक दशक में सरकार और समाज दोनों की सोच में बड़ा बदलाव आया है। खेल बजट में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और अब भारत का खेल मॉडल खिलाड़ी-केंद्रित बन चुका है। प्रतिभा पहचान से लेकर वैज्ञानिक प्रशिक्षण, पोषण और पारदर्शी चयन प्रक्रिया हर स्तर पर खिलाड़ियों के हितों को सर्वोपरि रखा जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि आज देश 'रिफॉर्म एक्सप्रेस' पर सवार है, जिससे हर क्षेत्र जुड़ा हुआ है और खेल भी इसका अहम हिस्सा हैं। 'राष्ट्रीय खेल शासन अधिनियम' और 'खेलो भारत नीति 2025' जैसे प्रावधानों से प्रतिभाशाली युवाओं को बेहतर अवसर मिलेंगे, खेल संस्थाओं में पारदर्शिता बढ़ेगी और युवा खेल व शिक्षा दोनों में आगे बढ़ सकेंगे।

विज़न 2047: खेल विकास की स्पष्ट रूपरेखा

केंद्रीय युवा कार्य एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने 'विकसित भारत विज़न 2047' में देश के खेल भविष्य के लिए एक स्पष्ट और महत्वाकांक्षी रोडमैप साझा किया। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य अगले बीस वर्षों में भारत को विश्व के शीर्ष पाँच खेल राष्ट्रों में शामिल करना है। इसके लिए 2036 ओलम्पिक खेलों में पदक तालिका में शीर्ष दस देशों के भीतर स्थान बनाने और उसके बाद के दशक में भारत को विश्व के शीर्ष पाँच खेल देशों में स्थापित करने की विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई है, जिसे प्रधानमंत्री ने अपनी स्वीकृति दे दी है।

ग्रामीण खेलों के विकास पर विस्तार से चर्चा करते हुए डॉ. मांडविया ने कहा कि वर्ष 2030 में अहमदाबाद में राष्ट्रमंडल खेलों की मेज़बानी की जाएगी और सरकार को 2036 ओलम्पिक खेलों की मेज़बानी का अवसर मिलने की भी पूरी उम्मीद है। उन्होंने कहा कि ऐसे वैश्विक आयोजनों के माध्यम से योगासन, कबड्डी, खो-खो और मल्लखम्ब जैसे पारम्परिक ग्रामीण खेलों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा।

स्वदेशी और जनजातीय खेलों का पुनरुत्थान

योगासन, कबड्डी, खो-खो और मल्लखम्ब के अलावा थांग-ता, गतका और कलारीपयट्टु जैसी पारम्परिक विधाओं को भी खेलो इंडिया योजना के अंतर्गत 'ग्रामीण स्वदेशी एवं जनजातीय खेलों का संवर्धन' पहल के माध्यम से राष्ट्रीय पहचान मिल रही है। इन सातों पारम्परिक खेलों को अब विभिन्न खेलो इंडिया खेल आयोजनों में औपचारिक रूप से शामिल कर लिया गया है, जिससे इन्हें एक संगठित प्रतिस्पर्धी मंच और देशभर में नई पहचान मिल रही है। इस घटक के अंतर्गत खेल अवसंरचना के विकास, उपकरण सहायता, प्रशिक्षकों की नियुक्ति, प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण तथा चयनित खिलाड़ियों को छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिए अनुदान भी स्वीकृत किए जा रहे हैं।

चूँकि 'खेल' राज्य सूची का विषय है, इसलिए पारम्परिक खेलों के संरक्षण, संवर्धन और प्रतियोगिताओं के आयोजन की मुख्य ज़िम्मेदारी संबंधित राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेश सरकारों की है। केंद्र सरकार उनके प्रयासों को केवल आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराकर सशक्त बनाती है।

खेलो इंडिया: भारत के खेल भविष्य की आधारशिला

खेलो इंडिया ने भारत में ज़मीनी-स्तर पर खेल संस्कृति को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विद्यालय

और महाविद्यालय-स्तर पर खेलों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शुरू की गई इस पहल का मुख्य फ़ोकस ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से उभरती युवा प्रतिभाओं की पहचान और उनका समुचित विकास है। एक सुव्यवस्थित प्रतियोगी मंच प्रदान कर खेलो इंडिया के अंतर्गत खेल ज़मीनी-स्तर की भागीदारी और उच्च प्रदर्शन के बीच की दूरी को पाटने का कार्य कर रहे हैं।

खेलो इंडिया ढाँचे के अंतर्गत खिलाड़ियों को पेशेवर प्रशिक्षण, आधुनिक सुविधाएँ, खेल विज्ञान का सहयोग तथा वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। इस कार्यक्रम में खिलाड़ियों के दीर्घकालिक विकास पर विशेष ज़ोर दिया गया है, ताकि होनहार खिलाड़ियों को निरंतर और स्थायी समर्थन मिल सके। साथ ही, पारम्परिक और ग्रामीण खेलों को विशेष महत्व देते हुए भारत की खेल विरासत को संरक्षित रखने का भी प्रयास किया जा रहा है।

खेलो इंडिया खेलों की समावेशी प्रकृति ने बालिकाओं तथा आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों के खिलाड़ियों की भागीदारी को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया है। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और स्थानीय खेल संस्थाओं को जोड़कर इस पहल ने एक सशक्त प्रतिभा शृंखला विकसित की है, जो विज़न 2047 के लक्ष्यों और भारत को विश्व के अग्रणी खेल राष्ट्रों में स्थापित करने की आकांक्षा के अनुरूप है।

देशभर में ज़मीनी-स्तर के खेलों और खिलाड़ियों के विकास को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए भारत सरकार के युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय ने 'खेलो इंडिया कार्यक्रम' के अंतर्गत एक व्यापक वार्षिक खेल कैलेंडर की शुरुआत की है। यह पहल सरकार के उस दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है, जिसके तहत वर्ष भर विभिन्न खेल विधाओं में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए एक संगठित, समावेशी और प्रतिस्पर्धी खेल पारिस्थितिकी-तंत्र का निर्माण किया जा रहा है।

खेलो इंडिया योजना के अंतर्गत आयोजित किए जाने वाले प्रमुख खेल आयोजनों में *खेलो इंडिया बीच गेम्स, खेलो इंडिया यूथ गेम्स, खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स, खेलो इंडिया वॉटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल, खेलो इंडिया नॉर्थ-ईस्ट गेम्स, खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स, खेलो इंडिया पैरा गेम्स और खेलो इंडिया विंटर गेम्स* शामिल हैं।

खेलो इंडिया कार्यक्रम

खेलो इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत स्थापित खेलो इंडिया केंद्र और खेलो इंडिया राज्य उत्कृष्टता केंद्र देश में ज़मीनी-स्तर से लेकर उच्च प्रदर्शन तक की खेल विकास व्यवस्था की रीढ़ हैं। इन केंद्रों का उद्देश्य गाँव-स्तर पर प्रतिभा पहचान से लेकर राज्य और राष्ट्रीय-स्तर पर उच्चस्तरीय प्रशिक्षण तक एक सतत और प्रभावी मार्ग तैयार करना है। वर्तमान में देश के लगभग 750 ज़िलों में एक हज़ार से अधिक खेलो इंडिया केंद्र और खेलो इंडिया राज्य उत्कृष्टता केंद्र उच्च गुणवत्ता का प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं।

खेलो इंडिया केंद्र

खेलो इंडिया केंद्र मुख्य रूप से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में स्थापित किए गए हैं। इनका उद्देश्य युवा प्रतिभाओं की पहचान कर उन्हें बुनियादी से लेकर मध्यवर्ती-स्तर तक का प्रशिक्षण, फिटनेस कार्यक्रम और खेल शिक्षा उपलब्ध कराना है। विद्यालयों, महाविद्यालयों, पंचायत मैदानों तथा SAI विस्तार केंद्रों जैसी मौजूदा खेल अवसंरचनाओं को उन्नत कर इन केंद्रों का संचालन किया जा रहा है। प्रत्येक खेलो इंडिया केंद्र क्षेत्रीय खेल परम्परा के अनुसार एक या दो प्राथमिक खेलों पर केंद्रित रहता है, जिससे सामुदायिक भागीदारी और निरंतर खिलाड़ियों का विकास सुनिश्चित होता है।

खेलो इंडिया राज्य उत्कृष्टता केंद्र

खेलो इंडिया राज्य उत्कृष्टता केंद्र खिलाड़ियों के विकास की अगली कड़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। राज्य सरकारों द्वारा संचालित सर्वश्रेष्ठ खेल परिसरों में से चयनित ये केंद्र उन्नत प्रशिक्षण, उच्चस्तरीय कोचिंग, खेल विज्ञान सहायता, पोषण, चिकित्सीय देखभाल तथा आवासीय सुविधाएँ प्रदान करते हैं। इन केंद्रों का उद्देश्य ऐसे उत्कृष्ट खिलाड़ियों को तैयार करना है, जो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एशियाई खेल, राष्ट्रमंडल खेल और ओलम्पिक जैसी प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व कर सकें।

खेलो इंडिया केंद्र और राज्य उत्कृष्टता केंद्र मिलकर यह सुनिश्चित करते हैं कि ग्रामीण प्रतिभाएँ अवसरों के अभाव में पीछे न छूटें। ज़मीनी-स्तर की मज़बूत नींव को उच्च प्रदर्शन केंद्रों से जोड़ते हुए खेलो इंडिया ढाँचा विजन 2047 के लक्ष्यों और भारत को विश्व के अग्रणी खेल राष्ट्रों में स्थापित करने के संकल्प को मज़बूती प्रदान करता है।

खेलो इंडिया राइज़िंग टैलेंट आइडेंटिफिकेशन

खेलो इंडिया राइज़िंग टैलेंट आइडेंटिफिकेशन (KIRTI) खेलो इंडिया योजना के अंतर्गत शुरू की गई एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य कम उम्र में ही देशभर से खेल प्रतिभाओं की वैज्ञानिक ढंग से पहचान करना है विशेषकर ग्रामीण, जनजातीय और अर्ध-शहरी क्षेत्रों से। इस कार्यक्रम के माध्यम से भावी शीर्ष खिलाड़ियों की एक मज़बूत और सतत प्रतिभा शृंखला विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है।

KIRTI के तहत विद्यालयों, गाँवों और ज़मीनी-स्तर की प्रतियोगिताओं में बड़े पैमाने पर प्रतिभा मूल्यांकन अभियान चलाए जाते हैं। बच्चों और किशोरों की आकलन गति, सहनशक्ति, शक्ति, फुर्ती और समन्वय जैसे मानकीकृत शारीरिक, शारीरिक-क्रियात्मक और कौशल-आधारित मानकों पर किया जाता है। यह वैज्ञानिक पद्धति, सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, प्रतिभा की निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ पहचान सुनिश्चित करती है।

KIRTI के माध्यम से चयनित खिलाड़ियों को आगे संरचित प्रशिक्षण, दीर्घकालिक खिलाड़ी विकास और निरंतर प्रदर्शन निगरानी के लिए खेलो इंडिया केंद्रों और खेलो इंडिया राज्य उत्कृष्टता केंद्रों से जोड़ा जाता है।

पंचायत युवा क्रीड़ा एवं खेल अभियान

पंचायत युवा क्रीड़ा एवं खेल अभियान (PYKKA) भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण-स्तर पर खेल गतिविधियों को सशक्त बनाना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत गाँव और ब्लॉक-स्तर पर खेल अवसंरचना के विकास, खेल उपकरणों की खरीद तथा खेल गतिविधियों के संचालन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

इसके साथ ही ब्लॉक, ज़िला और राज्य-स्तर पर वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन को भी प्रोत्साहन दिया जाता है। कार्यक्रम के अंतर्गत संचालन व्यय और स्वयंसेवकों के मानदेय के लिए भी सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

सांसद खेल महोत्सव

सांसद खेल महोत्सव ज़मीनी-स्तर पर खेलों और शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देने की एक प्रमुख पहल है, जिसका नेतृत्व संसद सदस्य करते हैं। इसका उद्देश्य स्थानीय प्रतिभाओं को निखारना और 'विकसित भारत' के विज़न के अनुरूप एक सशक्त खेल संस्कृति का निर्माण करना है।

खेलो इंडिया और युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय के सहयोग से यह आयोजन लोकसभा क्षेत्रों में ग्राम, ब्लॉक/वार्ड और संसदीय क्षेत्र-स्तर पर किया जाता है, जिससे अधिक से अधिक युवाओं को खेल गतिविधियों से जोड़ा जा सके।

सुशासन और जवाबदेही

9 जनवरी, 2026 को केंद्रीय युवा कार्य एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने अहमदाबाद स्थित वीर सावरकर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में भारत सरकार, गुजरात सरकार और भारतीय ओलम्पिक संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित स्पोर्ट्स गवर्नेंस कॉन्क्लेव में देश की दीर्घकालिक खेल दृष्टि को दोहराते हुए कहा कि ओलम्पिक पदक तालिका में शीर्ष दस देशों में स्थान बनाना एक राष्ट्रीय लक्ष्य है, जिस पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता। उन्होंने इस लक्ष्य की प्राप्ति में राष्ट्रीय खेल महासंघों और राज्य ओलम्पिक संघों की निर्णायक भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि 2026 के एशियाई खेलों से शुरुआत करते हुए प्रत्येक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भारत के प्रदर्शन में निरंतर सुधार दिखाई देना चाहिए। वर्ष 2030 के राष्ट्रमंडल खेल भारत के लिए मेज़बान देश और एक सशक्त खेल शक्ति – दोनों रूपों में एक ऐतिहासिक उपलब्धि सिद्ध होने चाहिए। वर्तमान चरण को 'भारतीय खेलों का सुनहरा युग' बताते हुए उन्होंने जवाबदेही, शासन सुधार और दीर्घकालिक योजना पर बल दिया। महासंघों को निर्देश दिए गए कि वे 1, 3, 5 और 10 वर्षीय रोडमैप तैयार करें, जिसमें एथलीट कल्याण और राष्ट्रीय गौरव मार्गदर्शक सिद्धांत हों।

निष्कर्ष

भारत में ग्रामीण खेल अब एक महत्वपूर्ण मोड़ पर हैं। राजनीतिक समर्थन, बेहतर नीतियाँ, बढ़ा हुआ निवेश और स्थानीय समुदाय की भागीदारी से गाँवों में जन्मीं प्रतिभाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय-स्तर पर सफलता पाने के लिए ठोस रास्ते मिल रहे हैं। अब तक काफ़ी प्रगति हुई है, लेकिन यह यात्रा अभी खत्म नहीं हुई है। लगातार ध्यान और सही तरीके से काम करने से, ग्रामीण भारत की विशाल खेल प्रतिभा 2047 तक 'विकसित भारत' बनाने के सपने को साकार करने में मदद करेगी। ❑